कीमतें क्यों बढ़ती हैं?

गीता धर्मराजन

चित्राँकनः सुद्धोसत्व बासु

कथा की 300एम थिंकबुक

पिछले साल आप 10 रु. प्रति किलो चावल खरीद रहे थे। पर, इस साल आपको एक किलो चावल के लिए 15 रु. देने पड़ रहे हैं। हर चीज़ की कीमत बढ़ रही है। अर्थशास्त्री इसे मुद्रास्फीति कहते हैं।

क्या तुमने कभी सोचा है कि कीमतें क्यों बढ़ती हैं? आओ? इन तीन आसान कारणों से हम बात को समझें।

कारण–1

तुम्हारे गाँव में पिछले साल एक क्विंटल 100 कि. ग्रा. चावल की पैदावार हुई। हर किसान को 1000 रु. का लाभ हुआ।

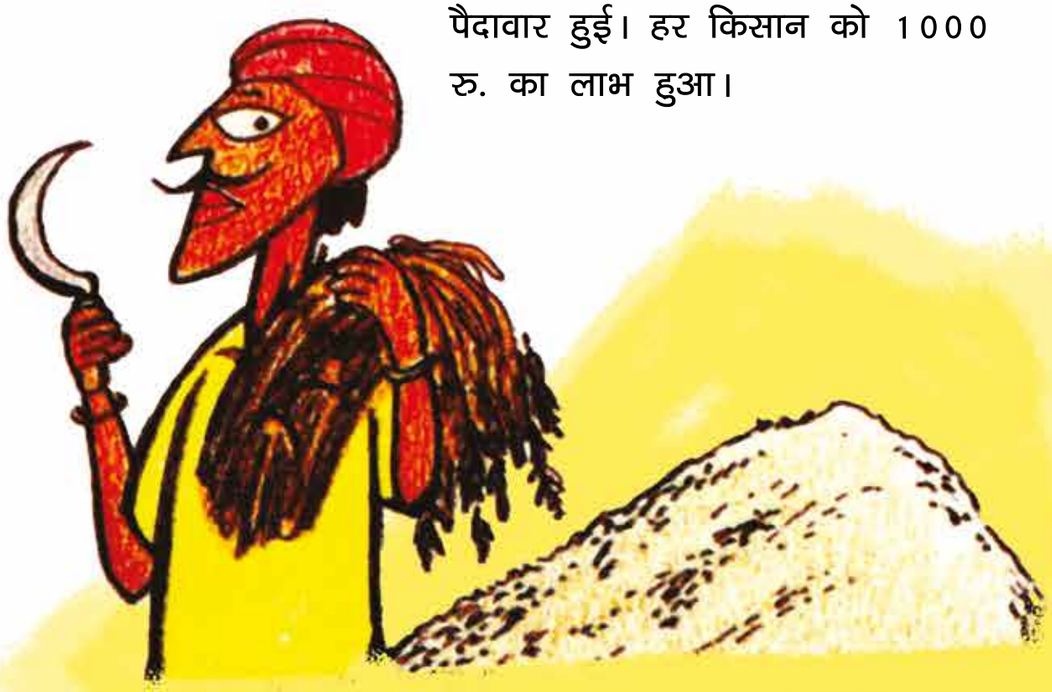

इस साल, चार किसानों ने कहा ‘‘पिछले साल ज़्यादा मेहनत करने के कारण हम अपने बच्चों के साथ समय नहीं बिता पाए। इस साल कम काम करेंगे, क्या हुआ अगर कम पैसे कमाएँगे।

तो, इस साल सब किसानों ने मिलकर केवल 80 कि.ग्र. चावल की पैदावार की।

बाजार में चावल की कमी है ...
तो कीमतें बढ़ गई।

कारण–2

तुम्हारे गाँव में सब परिवारों को मिलाकर, हर साल एक क्विंटल चावल की आवश्यकता होती है।

सभी परिवारों के लिए चावल पूरा है।

इस साल, गाँव में तीन शादियों के कारण अधिक चावल की आवश्यकता है।

दुकानदार सोचता है, चावल की माँग ज़्यादा है तो चावल ज़्यादा कीमत में बेचना चाहिए। बस ... कीमतें बढ़ गई।

तुम्हारे गाँव में तीस परिवार है।

इस साल चार और परिवार आकर, आपके गाँव में बस गए। जो बहुत अमीर है। दुकानदार सोचता है, जब ये परिवार चावल की ज्यादा कीमत दे सकते हैं तो क्यों न अधिक पैसे कमाएँ। और पूरे गाँव के लिए कीमतें बढ़ जाती हैं।

गीता धर्मराजन बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किये गये इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

शुद्धसत्व बसु जाने–माने चित्रकार हैं और एनीमेशन फिल्म बनाते हैं। कथा द्वारा प्रकाशित *एक स्केयरक्रो का गीत* पुस्तक के लिए इन्हें चित्रकथा पुरस्कार 2002 मिला है और ब्रातिसलावा 2003 के चित्राँकन प्रतियोगिता में इनका सम्मानित उल्लेख हुआ।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री,** *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग*

पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 1998, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन 2021
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा 2021
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं इसकी ग्रीन श्रृंखला में

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

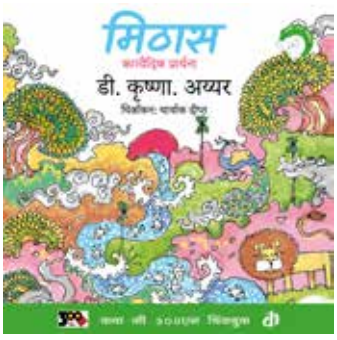

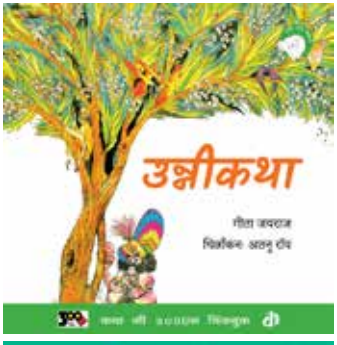

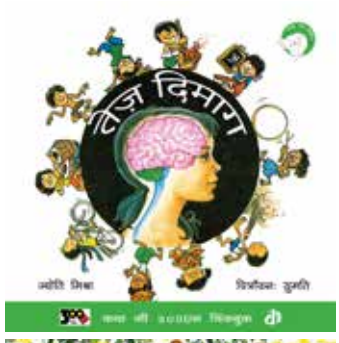

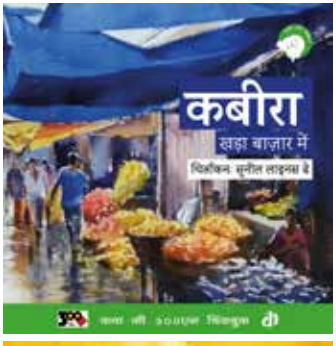

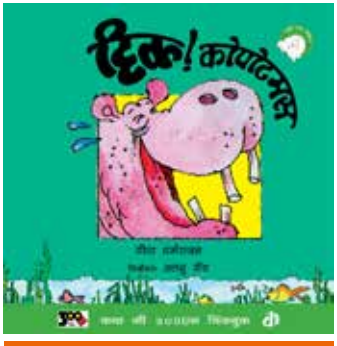

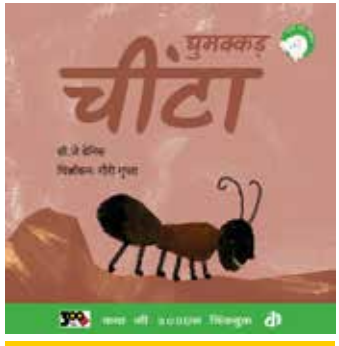

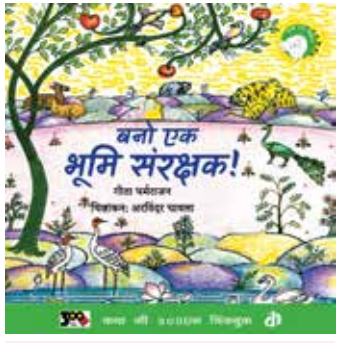

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx